ग्राम स्वराज अभियान के एक भी लक्ष्य पूरे नहीं हुए

17 बिंदुओं में से एक भी नहीं हो सके पूरे, कर्ता -धर्ताओं के लक्ष्य मात्र हुए पूरे

नवभारत न्यूज

पन्ना, 2 मार्च। महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज के माध्यम से विकास का सपना देखा था केन्द्र सरकार द्वारा ग्रामीण विकास के लिए राष्ट्रीय ग्राम स्वराज के तहत 9 लक्ष्य निर्धारित किये गये थे जिनमें से आज तक एक भी लक्ष्य पूरे नहीं हो सके। कारण सिर्फ यही रहा कि पंचायत एवं ग्रामीण विकास के चाहे निर्वाचित जनप्रतिनिधि रहे हो या शासकीय विभागीय अमला रहा हो। सबका लक्ष्य ग्रामीण विकास नहीं बल्कि स्वयं का विकास रहा है। इसी कारण ग्राम स्वराज का सपना चकनाचूर हो गया।

संविधान के अनुच्छेद 243 जी के अंतर्गत ग्यारहवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 29 विषयों सहित आर्थिक विकास एवं सामाजिक न्याय के लिये योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये राज्यों को अधिकार दिये गये हैं। इसके तहत ग्राम पंचायतों के लिये पंचायतें, जनपद स्तर के लिये जनपद पंचायत एवं जिला स्तर की परियोजनाओं के लिये जिला पंचायतों को अनुमोदन के लिये प्रावधान बनाये गये। इसके तहत पंचायत स्तर पर जीपीडीपी, ब्लाक स्तर पर बीपीडीपी, जिला स्तर पर डीपीडीपी तैयार करने के दिशा निर्देश हुये। जहां समय पर योजनाओं का खाका तैयार होता रहा किन्तु उसका क्रियान्वयन कारणो से आज तक नहीं हो पाया। जिस तरह से व्यापक रूप से प्रावधान किये गये वे केवल कागजों तक ही सिमट कर रह गये । कभी

योजनाओं का नाम बदला तो कभी अन्य संशोधन हुये। बावजूद इसके जमीन में कोई असर आज तक नहीं दिखाई दिया।

निर्धारित 9 थीम का लक्ष्य केवल दिखावा साबित:- राष्ट्रीय ग्राम स्वाराज अभियान के लक्ष्यों को पूरा करने के लिये 9 थीम निर्धारित किये गये थे। जिनमें गरीबी मुक्त गांव, स्वस्थ गांव, बाल हितैषी गांव, जल पर्याप्त गांव, स्वच्छ और हरित गांव, आत्मनिर्भर बुनियादी ढांचे वाला गांव, सामाजिक रूप से संरक्षित गांव, सुशासन वाला गांव, महिला हितैषी गांव थीम शामिल थी। इसके लिये 17 बिन्दुओं का सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किया गया था। जिनमें गरीबी के सभी रूपों को हर तरह से समाप्त करना, भुखमरी को समाप्त करना, सभी उम्र के लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा एवं स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना, समावेशी शिक्षा और सभी को समान अवसर, लैंगिक समाना से सशक्तिकरण, सभी के लिये स्वच्छ पानी की उपलब्धता, सभी के लिये सस्ती टिकाऊ एवं आधुनिक उर्जा तक पहुच सुनिश्चित करना, औधोगिकीकरण एवं नवाचार को बढ़ावा देना, शहरों एवं मानव वस्तियों को समावेशी, सुरक्षित एवं टिकाऊ बनाना, जंगलों का स्थायी प्रबंधन, भूमि संरक्षण एवं जैव विविधता के नुकसान को रोकना आदि लक्ष्य निर्धारित किये गये थे। इन लक्ष्यों एवं थीमों को देखने से लगता है कि गांवों के विकास के लिये सरकारों ने बेहतर योजनाओं की परिकल्पना की थी किन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि कागजों तक ही क्रियान्यन हो पाया। जमीन में योजनाओं का असर कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान का उदय और संचालन:- सूचीबद्ध मामलों को जमीन में उताने के लिये वर्ष 2016-17 में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान की शुरूआत हुई। क्रियान्वयन के लिये दिशा निर्देश जारी हुये। आगे चलकर राष्ट्रीय गाम स्वराज अभियान को संशोधित किया गया। इस तरह से समय-समय पर राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान में संशोधन तो होते चले गये। जिसके अनुसार ग्राम पंचायतों से लेकर जनपद व जिला पंचायत स्तर की योजनायें भी तैयार होती चली गई। किन्तु उन योजनाओं का क्रियान्वयन जमीन में नहीं हो पाया।

नहीं मिट पाई गांवों से गरीबी

पहली थीम एवं पहले लक्ष्य को ही देखा जाय तो गांवों से गरीबी आज तक नहीं हट पाई। गांवों में आज भी गरीबी बुरी स्थिति में पहुच चुकी है। भले ही पोषण के नाम पर कुछ लोगों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत पेट भरने के लिये सस्ते दर पर खाद्यान्न उपलब्ध हो रहा हो। किन्तु गरीबी को पूरी तरह से गांवों के भगाने को जिस तरह से लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिस तरह से कल्पना की गई थी वह सफल नहीं हो पाई। क्रियान्वयन में कमियां थी या सिस्टम में कमियां थी। कुछ न कुछ तो था जिसके चलते गरीब का आज भी चुनौती के रूप में दिखाई दे रही है। गांव के गरीब का हाल यह है कि वह बीमार होता है तो दवाई के लिये पैसे नही होते। गांव से बाहर जाने के लिये उसके पार किराये का पैसा नहीं होता। वह मजदूरी करने के लिये पलायन करता है। उसे बेहतर शिक्षा भी नही मिल पाती। लिहाजा यह कहा जा सकता है कि गरीबी हटाने की चिन्ता तो हुई किन्तु उसे प्रभावी तरीके से समाप्त करने के सफल प्रयास नही हो पाये। वहीं दूसरी ओर अधोसंरचना एवं विकास की बात की जाय तो वहां का भी यही हाल रहा। कागजों में योजनायें बजट उपलब्ध हुआ, किन्तु जमीन में वह नहीं उतर पाया। गुणवत्ता एवं समय सीमा का कोई ध्यान नहीं दिया गया करोड़ों की राशि कुछ ही वर्षो में एक-एक पंचायतों में पानी की तरह बहा दी गई। किन्तु जहां तस्वीर पंचायतों की चमकती हुई दिखनी चाहिये वहां वह आज भी अंधेरे में डूबी हुई दिखाई देती है। इसलिये सवाल यह उठता है कि इस तरह की योजनायें कब तक बनती रहेगी। जहां लंबे चौड़े भारी भरकम उपदेशों के साथ कार्यक्रमों का साहित्य तो तैयार हो जाता है। किन्तु वह जमीन में नहीं उतर पाता।

11 वीं अनुसूची में सूचीबद्ध मामले

ज्ञात हो कि ग्यारहवीं अनुसूची में मूलभूत कार्य एवं कल्याण से संबंधित मामलों को सूचीबद्ध किया गया था। जहां मूलभूत मामलो में पेयजल, सड़क, पुलिया, जलमार्ग, संचार, बिजली, अस्पताल, औषधालय, स्वच्छता, कृष, भूमिसुधार, सिंचाई, पशुपालन, डेयरी, मछली पालन, लघु वनोपज, बाजार मेला आदि को शामिल किया गया था। जबक कल्याण सूची में ग्रामीण आवास, गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, सांस्कृतिक गविविधियां, परिवार कल्याण, महिला बाल विकास, कमजोर वर्गों का कल्याण, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, लघु उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण, खादी ग्राम एवं कुटीर उद्योग को शामिल किया गया था।

अपराधों की ओर झुकता बचपन चिंताजनक

नवभारत न्यूज

पन्ना 2 मार्च। आधुनिक लाइफ स्टाइल बच्चों और किशोरवय के मन और मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डाल रही है। ऑनलाईन गेम हो या ऑनलाईन ठग, बच्चे ही इनका शॉफ्ट टॉरगेट बन रहे है।

ऑनलाईन पढ़ाई ने बच्चों को और भी अधिक मोबाइल फ्रेंडली बना दिया है। इसके अलावा परिवारों के बीच उपजी बेरोजगारी, परिवारिक कलह आदि ने भी बच्चों को प्रभावित किया है।

इन कारणों से अपराध की ओर झुक रहा बचपन:- हिंसक वीडियोगेम बच्चों की मनोवृत्ति पर विपरीत असर डालते हैं। इससे कई बार बच्चे दूसरों को हानि पहुंचाने के साथ ही खुद को भी पहुंचा लेते हैं नुकसान। अपराधिक घटनाओं पर आधारित टीव्ही सीरियल किशोर मन पर डालते हैं गंभीर प्रभाव। महंगी आधुनिक लाईफस्टाइल में कम पडती पॉकेट मनी भी शहरी बच्चों को छोटे छोटे अपराधों की ओर मोडने में अहम भूमिका निभाती है। मोबाइल में अधिक समय बिताने से अपनो से मिलना जुलना कम, होना बच्चों में एकाकी स्वभाव को बढ़ाता है। प्यार मोहब्बत के चक्कर में पडकर अपहरण, बलात्कार, पॉस्को, एसटीएससी सहित अन्य कई तरह के अपराधों के दलदल में फंस जाते हैं किशोरवय। माता पिता के काम पर चले जाने से बच्चों की समुचित देखरेख नहीं हो पाना या बच्चों के उपेक्षित महसूस करने पर भी वे अपराधों की ओर मुडने लगते हैं। माता पिता के साथ पलायन करने वाले बच्चों के कार्यस्थल पर आपसी मेलजोल बढ़ने बाद वापस लौटने पर वे गांव में रुकने के बजाए भाग जाते हैं। जिससे अपराध के दलदल में फंस जाते हैं। माता पिता के पलायन करने पर गांव में रह जाने वाले बच्चों के भी आसपास के बच्चों से संबंध बन जाने के कारण वे भाग जाते हैं। जिससे वे अपराध के दलदल में फंसते हैं। कामकाजी माता पिता का बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाना। माता पिता व परिवार के अन्य सदस्यों के बीच आपसी कलह। किशोरवय में नशे की लत का शिकार हो जाना। नशीले पदार्थो व अवैध हथियारों तक आसान पहुंच। शिक्षण संस्थाओं के आसपास और मोहल्लों में नशे और धूम्रपान के वस्तुओं की वैध व अवैध बिक्री। परिवार की आर्थिक विपन्नता भी कई बार बच्चों को अपराधिक गतिविधियों की ओर मुडने के लिए मजबूर करने में सहायक होती हैं।

भारतीय परिधानों की ओर क्यों नहीं युवाओं का आकर्षण

नवभारत न्यूज

पन्ना 2 मार्च। जीन्स का टाइट पेंट और टी शर्ट ने परिधानों की श्रेणी में अपने को सबसे आगे रखने का प्रयास अभी भी बदस्तूर जारी रखा है। भारतीय परिधानों में धोती-कुर्ता और गले में गमछा ग्रामीण भारतीय छवि को पेष करता था। बदलते वक्त के साथ और भारतीय परिधान विलुप्त होने की कगार में पहुंच गया है।

एक जमाना था जब भारत के परिधानों से व्यक्ति विष्व में पहचाना जाता था। समय ने तेजी के साथ अपने कदम बढ़ाते हुए इस दिषा में इतना परिवर्तन ला दिया है कि अब सारे पुराने परिधानों का लोगों ने त्याग करते हुए अपने को नये फैषन के दौर में शामिल कर लिया है। इस सम्बन्ध में जब धोती पहने एक पण्डित सीताराम गर्ग से बात की गई तो उन्होंने बताया कि धोती कुर्ता से शरीर को बहुत आराम मिलता है। सारे शरीर को हवा मिलते रहने से त्वचा सम्बन्धी रोगों से छुटकारा मिल जाता है। इस के सम्बन्ध में उन्होंने एक पंक्ति में कहा कि नया नौ दिन पुरान सौ दिन। कुछ इसी तरह की बात गंगाराम ने कही। उन्होंने बताया कि हमेषा से खद्दर का कुर्ता धोती पहनता आया हूं। उन्होंने कहा कि आज हम कितना बदल गये है। पहले भारत की पहचान उसके सरकार व परिधान के माध्यम से होती थी, लेकिन बदलते दौर के साथ लोगों ने इसे भुलाते हुये पष्चिम का दामन थाम लिया है। धीरे-धीरे हम अपनी संस्कृति को भी खाने में लगे है। हालांकि पुराने भारतीय परिधानों में ढेरों अच्छाईयां छिपी होने के बावजूद भी लोगों द्वारा इसे तिरस्कृत करते हुए नये फैषन के दौर में अपने आपको शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में जब टाइट जीन्स पहने नवयुवक राजेष से बात की गई तो उन्होंने बताया कि धोती-कुर्ता गुजरे जमाने का परिधान है। उस समय लोगों के पास वक्त था। जीवन में इतनी भागदौड़ नहीं थी। आज के समय में व्यक्ति जब तक धोती कुर्ता पहनेगा तब तक उसके साथ उससे कहीं दूर निकल जायेंगे।

राजनैतिक एवं प्रशासनिक संरक्षण में एक ही भवन पर नियम विरुद्ध चल रहे निजी उच्च शैक्षणिक संस्थान

नवभारत न्यूज

पन्ना 2 मार्च। मध्य प्रदेश ने प्राइवेट युनिवर्सिटी और कॉलेज के लिये जमीन और भवन सें संबंधित कई नियम बनाए हैं। मगर जिले में कुछ प्राइवेट कॉलेजों को छोड़ दें तो अधिकांश सभी शासन द्वारा निर्धारित मापदंड की धज्जियां उड़ा रहे हैं। वही एक ही भवन में जिला मुख्यालय में कई शेक्षणिक संस्थान नियम विरूद्ध चल रहे है।

बता दें कि मप्र शासन ने निजी विश्व विद्यालयों के लिये न्यूनतम 25 एकड़ और प्राइवेट कॉलेज के लिये कम से कम 5 एकड़ और प्राइवेट कॉलेज के लिये कम से कम 5 एकड जमीन अनिवार्य की है। बावजूद इसके पना जिले के अंदर एक से दो कमरों में सैंकड़ों निजी कॉलेजों निजी कॉलेजों का संचालन वर्षो से हो रहा है। ताज्जुब की बात तो यह है कि सालों से दो कमरों के सहारे चल रहे निजी महाविद्यालयों पर उच्च शिक्षा विभाग के किसी भी अधिकारी की नजर नहीं पड़ी। जबकि वह निरंतर उच्च शिक्षा विभाग के नियम कानून की अवहेलना करते आ रहे हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि जब शासन ने निजी कॉलेजों के संचालन के लिये पहले ही 5 एकड़ भूमि का होना अनिवार्य किया है, तो शिक्षा विभाग से कॉलेज संचालन के लिये उन्हें एनओसी केसे मिल गई। जाहिर है कि एनओसी की प्रक्रिया शासन स्तर से की जाती है ऐसे में यह साफअंदाजा लगाया जा सकता है कि अधिकारी निजी महाविद्यालयों के संचालकों से सांठगांठ करके बिना भौतिक सत्यापन किए कॉलेज की एनओसी क्लियर कर देते हैं।

दस्तावेजों में खेल के मैदान:- शासन द्वारा निजी महाविद्यालयों को पांच एकड़ जमीन के साथ साथ प्रत्येक कॉलेज में खेल के मैदान होने का भी नियम बनाया है। बकायदा अधिकारी कागजों मे हर वर्ष निरीक्षण की कागजी कार्रवाई भी करते हैं। बता दें कि पन्ना जिला में कई ऐसे कॉलेज हैं जहा खेल के मैदान तो दूर वह स्वंय किराए के भवन के सहारे संचालित हैं।

स्कूल बिल्डिंग में संचालित हैं बीएड कॉलेज

न सिर्फपीजी और यूजी कोर्स कराने वाले कॉलेजों का यह हाल है बल्कि शिक्षकों को तैयार करने वाले महाविद्यालयों में भी ऐसे ही कॉलेज चल रहे हैं। संस्था संचालकों ने एक ही इमारत में स्कूल संचालित की है और वहीं बीए, बीएड एवं कम्प्यूटर कॉलेज का ऑफिस खोल रखा है। सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि जिन निजी बीएड कॉलेजों में ऐसे नियमों की धड़ल्ले से धज्जियां उड़ाई जा रही है, वहां के शिक्षक भी स्कूल के बच्चों को पढ़ाते हैं क्योंकि कॉलेज में बीएड के छात्र पढ़ने नहीं आते। उसी कैम्पस में सिर्फस्कूल संचालित होती है। मगर उच्च शिक्षा विभाग के आला अधिकारी इस खेल पर गौर नहीं कर रहे हैं। न सिर्फपन्ना जिला में कई ऐसे बीएड कॉलेज हैं जो सिर्फडिग्री बांटने का काम पर्याप्त स्टाफहै न ही भवन। मगर कागजों में कई वर्षो से बीएड खिलाफकोई एक्शन नहीं लिया जा रहा है।

शहर में बिक रहा मिलावटी घी-दूध, नहीं हो रही कार्यवाही

नवभारत न्यूज

पन्ना 2 मार्च। पन्ना शहर सहित जिले भर में घी एवं दूध में मिलावट का खेल चल रहा है, जगह जगह पद दूध एवं घी विक्रय करने के लिए दुकानें व डेयरियां खुली हुई है जहां घी एवं दूध के नाम पर जहर बेंचा जा रहा है लेकिन इस सब के बावजूद खाद्य औषधी विभाग की टीम मूक दर्शक बनी हुई है।

ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिदिन हजारों लीटर दूध एवं घी बिक्री के लिए आता है जिसमें मिलावट कर विक्रय किया जाता है, इसकी कभी भी जांच नहीं की जाती, जब भी शासन व प्रशासन से कार्यवाही के निर्देश प्राप्त होते हैं। जिससे पन्ना शहर व जिले के लोग अपनी सेहत बनाने के नाम पर दूषित एवं शरीर को नुकसान पहुंचाने वाले दूध एवं घी का सेवन करने को विवश हैं, अगर पन्ना शहर की बात की जाय तो कई मिष्ठान दुकानों में मिठाई के नाम पर मिलावट कर जहर बेंचा जा रहा है, खाने मे इसे आसानी से नहीं समझा जा सकता। लेकिन खाद्य विभाग की टीम ईमानदारी से कार्यवाही करे तो बहुत बडा खुलासा हो सकता है। लेकिन टीम के लोग सही कार्यवाही करने के बजाय दुकानदारों से मिल जाते हैं। जिले के अजयगढ़ क्षेत्र से व यूपी की तरफसे भी बडी तादाद में नकली घी, पन्ना लाकर विभिन्न दुकानों में स्टॉफकर विक्रय किया जाता है। विक्रय हो रहे इस घी का आसानी से पता नहीं लगाया जा सकता क्यों कि उसमें शुद्ध

घी जैसी महक से लेकर उसके स्वाद को वैसा ही बनाया जाता है जिससे की लोग आसानी से समझ न पाए हालांकि इस नकली घी के बारे में यदि गहनता से जांच कर ले तो उसके असली व नकली होने का पता चल सकता है लेकिन यह हर किसी के बस की बात नहीं है, जानकारी मिली है कि नकली घी ठण्डियों के दिनों में भी पिघला रहता है कम जमता है, साथ ही उसकी कुछ दिन बाद सुगंध भी चली जाती है इतना ही नहीं वह शुद्ध घी तरह रवीला नहीं होता, खाने के दौरान ओरिजनल घी से उसका स्वाद भिन्न नजर आता है लेकिन यह वही समझ सकते हैं जो ओरिजनल घी का इस्तेमाल कर चुके हैं।

पन्ना शहर में कुकुरमुत्तों की तरह डेयरियां:- जगह खुली डेयरी की दुकानों में नकली घी व दूध डंके की चोट पर बिक रहा है इस संबंध में खबरे भी प्रकाशित होती रहती है, जिसको लेकर कई बार प्रशासन होती रहती है, जिसको लेकर कई बार प्रशासन की तरफ से छापामार कार्यवाही करने के लिए खाद्य विभाग को निर्देश जारी किए जाते हैं। लेकिन कार्यवाही के नाम पर औपचारिकता की जाती है, पन्ना बस स्टैंड में अजयगढ़ की जाती है, पन्ना बस स्टैंड में अजयगढ़ की तरफसे आने वाला नकली घी एकाद बार पकडा गया था ज्ञात हो कि जब इस संबंध में खबरे प्रकाशित होती है, प्रशासन द्वारा कार्यवाही करने के लिए कहा जाता है तब ही खाद्य विभाग की टीम सक्रिय होती है वह भी सिर्फकागजी खानापूर्ति के लिए कार्यवाही करती है, बाद में सुस्त पड जाती है सुस्त क्यों पडती है, इसकी वजह वह ही जान सकती है लेकिन इस पर सवालिया निशान जरूर खडे हो रहे हैं। खाद्य एवं औषधी जांच विभाग को चाहिए कि वह पन्ना शहर व जिले के अन्य कस्बा क्षेत्र में बिक रहे मिलावटी खाद्य पदार्थ व दूषित सामग्री की जांच कर सख्ती के साथ कार्यवाही करें समय समय पर यह मुहिम निरंतर चलनी चाहिए। अकेले पन्ना नगर में दो दर्जन से अधिक जगहों पर डेयरी की दुकानें खुली हुई है। जहां कई जगह डंके की चोट पर मिलावटी घी एवं दूध विक्रय किया जाता है। पन्ना नगर के अजयगढ़ चौराहा से लेकर कचेहरी चौराहा, गांधी चौक, किशोर जी मंदिर चौराहा, बडा बाजार, कुमकुम टॉकीज के पास, अस्पताल चौराहा, भारतीय स्टेट बैंक के पास, अस्पताल चौराहा, कांच मंदिर के पास से लेकर शहर के चारों तरफदुकानें खुली हुई हैं।

विश्व श्रवण दिवस 6 मार्च पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

नवभारत न्यूज

पन्ना 2 मार्च। राष्ट्रीय बधिरता नियंत्रण एवं रोकथाम कार्यक्रम अंतर्गत विश्व श्रवण दिवस के अवसर पर जिला अस्पताल में दिनांक 6 मार्च को प्रात: 10 बजे से स्वास्थ्य एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाना है जिसमें बधिरताओ एवं कान से संबंधित बीमारियो के मरीजो की जॉच, उपचार, रेफ्रल प्रदान किया जाएगा।

सीएमएचओ डॉ आर पी तिवारी ने बताया कि श्रवण संबंधी देखभाल को बढावा देने एवं बहरेपन और सुनने की क्षमता में कमी की समस्या के बारे में जागरूकता बढाने के उद्देश्य से 06 मार्च को संस्था एवं समुदाय स्तरीय गतिविधिया आयोजित की जाएगी। जिसमें जिला चिकित्सालय, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर एवं आरबीएसके टीमो द्वारा विद्यालयो में भ्रमण कर श्रवण संबंधी समस्या से ग्रसित मरीजो को जॉच, उपचार एवं रेफ्रल प्रदान किया जाएगा। सीएमएचओ ने जिले की स्वंयसेवी संस्थाओ, नागरिको से जिला चिकित्सालय में आयोजित शिविर में कान से संबंधित परेशानियों वाले मरीजो को उपस्थित करवाने हेतु अपील की गई है।

बुंदेलखंड अंदाज में रंगपंचमी तक जारी रहेगी होली

नवभारत न्यूज

पन्ना 2 मार्च। बुंदेलखंड का लोक जीवन पर्व और संस्कृति कृषि पर आधारित है। मकर संक्रांति और होली इसके उदाहरण है। खरीफ की फसल घर मे आती है तो बुंदेलखंड में मकर संक्रांति का पर्व होता है। इसी प्रकार रबी की फसल तैयार होने पर यहां के वाशिंदे खुशी से झूम उठते हैं और होली के रंग में रंग जाते हैं। बुंदेली साहित्य और संस्कृति में जितना महत्व होली को दिया गया है उतना किसी अन्य पर्व को नहीं मिला।

यहां के लोकजीवन मे होली का रंग लहू की तरह समाया हुआ है। बुंदेली कवि गंगाधर, ईसुरी, पदमाकर, ख्यालीराम से लेकर आधुनिक कवि मनोहर, लल्लूमल चौरसिया, नवल किशोर सोनी मायूस और अवध किशोर जडिया तक की फागों मे लोक पर्व का चित्रण है।

होली नहीं फाग:- पूरे देश में होलिका दहन के बाद के पर्व को होली कहा जाता है लेकिन बुंदेलखंड में में इस त्यौहार को फाग कहा जाता है इस संबंध बुंदेली के प्रोफेसर बताते हैं। फागुन माह में प्रकृति अपना रंग बदलती के साथ ही बुंदेलखंड के लोग भी श्रृंगार और भक्ति के रंग में डूब जाते हैं। यहां श्रृंगार हमेशा से मर्यादित रूप में रहा है। गांव की चौपालों पर ढोलक की थाप पर फागों के फड़ जमते हैं तो लोग झूम उठते हैं। यहां टेसू के फूलों के रंग से होली खेली जाती है। इसलिये होली नहीं बल्कि फाग यहां प्रचलित है। इस अवसर पर गाए जाने वाले गीतों फाग यहां प्रचलित हैं। फागों में ही श्रृंगार प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन इसे राधा और कृष्ण से जोड़कर प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। जिसे सुनकर लोग भक्ति के साथ श्रृंगार का आनंद लेते हैं।

लोक मान्यताओं का चित्रण:- बुंदेलखंड में परंपरा है कि बुरी नजर से बचने के लिये होलिका दहन के बाद परिवार के सदस्यों की नजर उतारकर राई और नमक होलिका में डाला जाता है। ऐसी मान्यता है कि होलिका मे

राई नमक से साल भर बुरी नजर नहीं लगती।

तिलक लगाकर की लंबी उम्र की कामना:- भाई दूज के त्यौहार पर बहनें भाईयों के माथे पर तिलक लगाकर लंबी उम्र की कामना करती हैं। भाई अपनी बहनों को उपहार देकर और जीवनभर रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। रंगों का त्यौहार होली शहर में बडे ही धूम धाम से मनाया जाता है। बच्चों और युवाओं मे होली को लेकर खासा उत्साह रहता है।

परीक्षाओं पर भारी रंगों का त्यौहार:- दसवीं ओर बारहवीं की परीक्षाएं शुरू हो गई हैं। इसलिये युवाओं में परीक्षाओं को लेकर खासा दबाव रहेगा। पर रंगों का त्यौहार होली परीक्षाओं पर भारी पड़ रहा है। होली पर नशा करने वालों की भी कमी नहीं रहती। सुरक्षा की दृष्टि से शहर की शराब दुकानों को कागजी आदेश में बंद करा दिया जाता है। पर चोरी छिपे शहर के पूरे जिले में अवैध रूप से शराब की बिक्री होती है।

नगडियां की खनक से बढ़ता है उत्साह:- नगडियां वादन की कला से जुडे संगीत रसिकों का कहना है कि जब नगडियां बजती है और कलाकार रम जाते है तब इस वाद्य की खनक दिलों का उत्साह बढ़ाने वाली होती है। ग्रामों में लोगों को कहना हैं कि नगडियां से जो राग उत्पन्न होता है, उसका मजा ही कुछ अलग होता है। दूर दूर तक जहां भी नगडियां की आवाज जाती है तो लोग एक बार मौके पर जाकर कार्यक्रम का आनंद उठाने मजबूर हो जाते हैं।

पहले ऐसे बनते थे रंग:- पहले रंग बनाने के लिए रॉ मटेरियल के रूप में रंग बिरंगे फूलों का प्रयोग किया जाता था। अपने चिकित्सकीय गुणों के कारण इन फूलों से बना रंग त्वचा को निखारने का काम करता था। लेकिन समय के साथ पेड़ों की संख्या में कमी आने लगी इसके साथ ही रंगों से जुडे नफे नुकसान की भी चर्चा होने लगी। फूलों से रंग बनाना महंगा पडता, इसलिए नफे को ध्यान रखते हुए रंगों को बनाने के लिए रासायनिक प्रक्रिया का सहारा लिया जाने लगा। यह व्यापार की दृष्टि से तो मुनाफे का सौदा था, पर स्वास्थ्य और पर्यारण के लिए अत्यंत नुकसानदायक है।

यह है नई वेरायटी:- बाजार में नई वैरायटी में मेढक, स्पाइडर मैन,गुडिया, वाटर पावर रेंजर्स, मिकी माउस आदि हैं। पिछले साल के दामों में लगभग 20 फीसदी तक की बढोत्तरी हुइ है। इनके अलावा बैग वाली पिचकारी, पिचकारी, रंग गुलाल, गुलाल स्प्रे, कलर कॉर्टून, रंग बिरंगी बाल वाली टोपी भी मार्केट में अच्छी डिमांड है लोगों में काफी उत्साह देखा जा रहा है।

अब नहीं सुनाई देती नगड़ियों की थाप

होली पर्व के साथ ही बुदेंलखंड के ग्रामीण अंचलों मे आज भी नगडियों की धमक सुनी जा सकती है। इस वाद्य यंत्र बजाने वाले फनकार अब कम जरूर हो गए हैं, लेकिन सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में नगडियां आज युवाओं के लिये आउट ऑफफैशन बन गई है। नगडियों आज के कलाकारों को रास नहीं आ रही। फाग गीत में नगडिया न होना कल्पना तक नहीं की जा सकती। लेकिन मौजूदा दौर में नगडिया संस्कृति को सहेजने वाले बहुत कम लोगे ही रह गए हैं। होली के आते ही कुछ दशक पहले तक ग्रामीण अंचलों के साथ शहरी क्षेत्रों में भी नगडियों की तान छिड़ना शुरू हो जाती थी, लेकिन अब न वे कलाकार बचे हैं और न ही वह कला। यह परंपरा मौजूदा दौर में सिर्फकुछ ग्रामीण अंचलों मे ही जीवित है, जहां लोग सभी अभी भी सिद्दत के साथ इस कला को अपनाए हुए है। राई नृत्य को भले ही कुछ कलाकार अपनाए हुए हैं, लेकिन यह नृत्य कला आज ऊंचे स्तर तक पहुंच चुकी है। राई नृत्य कला को प्रस्तुनत करने वाली महिला कलाकार जितनी महत्वपूर्ण होती हैं, उतना ही महत्व नगडियां की होती है। नगडियां के बिना राई नृत्य के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता।

केमिकल युक्त रंग एवं गुलाल हो सकते हैं नुकसानदायक

मुनाफा कमाने की आड़ में रासायनिक रंग बहुतायत से बाजार में बेंचे जा रहे हैं। जिसका हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। होली को सबसे ज्यादा सेलीब्रेट बच्चे और किशोर करते हैं। वे भला क्या जाने कि उनकी पिचकारियों से निकलने वाले रंग जहरीले केमिकल से बने, और काफी नुकसानदायक हैं। जबकि पहले ये रंग फूलों से बनाये जाते थे। जिसका विपरीत असर शरीर पर नहीं पड़ता था। ऐसे में जागरूकता आवश्यक है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार होली के रंगों को बनाने के लिए जिन जहरीले रसायनों का प्रयोग किया जाता है। उनका स्वास्थ्य पर बहुत विपरीत प्रभाव पडता है। जैसे काला रंग बनाने के लिए लेड ऑक्साइड का प्रयोग किया जाता है। जिससे किडनी फेल होने का खतरा होता है। इसी तरह हरा रंग कॉपर सल्फेट से बनता है। इसका कुप्रभाव सीधा आंखों पर पडता है। जिसके कारण आंखों में एलर्जी सूजन तथा व्यक्ति अस्थायी रूप से अंधा भी हो सकता है। लाल लंग मरक्यूरी सल्फाइट से बनता है यह रसायन अत्यंत जहरीला होता है। और इससे त्वचा का कैंसर हो सकता है।

रंग बिरंगे मुखौटे और राजस्थानी पगड़ी होंगे आकर्षण

रंगों का त्यौहार होली के अवसर पर शहर के मुख्य बाजारों में पिचकारी, रंग और गुलाल की दुकानें सज गई हैं। शहर के बडा बाजार, साई मंदिर और किशोरजी मंदिर एवं बलदाऊ जी के आसपास आधा दर्जन से भी अधिक रंग गुलाल और पिचकारी की दुकानें सजी हुई है। बाजार में तरह तरह की आकृतियों की पिचकारी और मुखौटे बच्चों को खूब भा रहे हैं। रंग गुलाल के साथ पिचकारियों की भी खूब खरीददारी हो रही हैं। बाजार में होली में चाइना के उत्पाद पूर्व के सालों की अपेक्षा कम हैं। बाजार में चाइना की पिचकारी के साथ बाहुबली, राजस्थानी टोपी व निमल मास्क बच्चों के आकर्षित कर रहे हैं। विक्रेताओं ने बताया कि बाजार में सबसे ज्यादा मांग इस बार बंदूक वाली पिचकारी की है। ड्रैगन गन खूब पसंद की जा रही है। विक्रेताओं के बाद त्यौहार को लेकर लोगों में दोगुना उत्साह है। इसी कारण से जमकर खरीददारी हो रही है।